International Journal of Education and Science Research Review
E- ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-6 December- 2014 P- ISSN2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

# सर्व शिक्षा अभियान द्वारा शिक्षण अधिगम की सामग्री (TLM) का प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियो की अध्ययन सहभागिता पर होने वाले प्रभावो का अध्ययन।

**श्रीमती प्रभा शर्मा**
शोधकर्त्ता
मेवाड़ विश्वविद्यालय
चित्तौडगढ़ (राज0)

**डॉ0 एम0के0 तिवारी**
मार्गदर्शक
मेवाड़ विश्वविद्यालय
चित्तौडगढ़ (राज0)

**प्रस्तावना–**

जन्मजात संस्कार मानव को माता–पिता सं पाप्त होते है जिनसे केवल मनुष्यरूपी प्राणी का ही निर्माण होता है। जन्म के पश्चात् प्राप्त होने वाली शिक्षा से मनुष्य रूपी प्राणी का रूपान्तरण मानव या संस्कारित इंसान के रूप में होता है। शिक्षा परिवार तथा विद्यालयो द्वारा भी प्राप्त होती है। नींव पर ही ईमारत खडी होती है। ईमारत की मजबूती तथा गुणवत्ता नींव पर निर्भर करती है। इसी प्रकार से प्राथमिक स्तर की शिक्षा मानव के व्यक्तित्व निर्माण हेतु नींव का कार्य करती है।

राज्य तथा केन्द्र की सरकारे प्राथमिक स्तर की शिक्षा पर अधिकाधिक ध्यान दे रही है। प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता लाने , इसे अधिक उन्नत व अधिकाध्कि समाजोपयोगी बनाने हेतु सरकारो द्वारा पर्याप्त बजट देकर समसामाायिक नवाचारो का प्रयोग किया जा रहा है। इसी पर आधारित अभियान प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओ हेतु संचालित किया गया सर्व शिक्षा अभियान है। सर्व शिक्षा अभियान के निम्नलिखित लक्ष्य है–

- ❖ गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करना ।
- ❖ प्राथमिक शिक्षा द्वारा सामाजिक न्याय को लागू करना।
- ❖ शिक्षा व्यवस्था में विभिन्न संस्थाओ के माध्यम से जन–भागीदारी बढाना।
- ❖ शिक्षा की उन्नति हेतु विभिन्न संस्थाओ में आपसी सहयोग स्थापित करना।
- ❖ प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण करना।

इसी क्रम में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओ के बालको को प्रत्येक विषय की अभ्यास पुस्तिका उपलब्ध करवाई जाती है। यह पाठ्यपुस्तक की पूरक पुस्तिका होती है सिके द्वारा बालक पाठ्यपुस्तक की पाठ्यसामग्री को आत्मसात आसानी से कर सके। इस प्रक्रिया से बालक को घर–पर सम्पन्न करने वाले कष्ठप्रद कार्य से भी मुक्ति मिलेगी। सम्पूर्ण कार्य कक्षाकक्ष में ही सम्पन्न हो जाएगा।

एक अन्य नवाचार भी सर्वशिक्षा अभियान द्वारा संचालित किया गया है। यह बालक द्वारा स्वयं करके सीखने (Learning by Doing)के सिद्धांत पर आधारित है। इस संकल्पना को साकार करने हेतु कक्षा कक्ष में शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM)की सहायता से शिक्षक पाठ को पढाता है। इस प्रक्रम में शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक की होती है, बालको की सहभागिता बढ जाती है। तथा पाठ्यवस्तु सरल एवं सहज बोधगम्य हो जाती है। कक्षा शिक्षण बालको के लिए अधिक रूचिकर बन जाता है।

**शोध के उद्देश्य**

1. राजकीय प्राथमिक तथा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में SSA द्वारा प्रदत्त अभ्यास पुस्तिका के वितरण एवं उपयोग की जानकारी प्राप्त करना।
2. प्राथमिक विद्यालय एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षण में TLM की उपलब्धता, उपयोग एवं प्रभावशीलता की जानकारी प्राप्त करना।
3. अभ्यास पुस्तिका तथा TLM के उपयोग से विद्यार्थियो के शैक्षिक उन्नयन की जानकारी प्रापत करना।
4. अभ्यास पुस्तिका एवं TLM विधाओ के क्रियान्वयन में शिक्षको, संस्था प्रधानो तथा शिक्षाधिकारियो की भूमिका का अध्ययन करना।
5. अभ्यास पुस्तिका तथा TLM के उपयोग से सम्बन्धित समस्याओ तथा इनके समाधान हेतु सकारात्मक सुझाव प्राप्त करना।

**परिकल्पनायेः–**

- ❖ कोटा जिले के समस्त राजकीय प्राथमिक विद्यालयो एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में अभ्यास पुस्तिकाएँ वितरित की जाती है किन्तु इतना वांछनीय उपयोग नहीं होता है।
- ❖ TLMका बजट आता है जिसका बालको हेतु सार्थक उपयोग नहीं होता है।
- ❖ अभ्यास पुस्तिका व TLM (नवाचार) द्वारा विद्यार्थियो का शैक्षिक उन्नयन आंशिक रूप से ही हुआ है।
- ❖ उक्त नवाचारो के संचालन में शिक्षको एवं संस्था प्रधानो तथा शिक्षाधिकारियो की भूमिका खानापूर्ति के रूप में होती है।
- ❖ शिक्षा के उन्नयन व विकास में इसके सभी घटको का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है।

**शोधपरिसीमनः–**

कोटा जिला के छः ब्लॉको में स्थित प्रतिब्लॉक दस विद्यालयो का शोध अध्ययन हेतु चयन किया गया है। प्रति विद्यालय से 10 विद्यार्थी, दो शिक्षक , एक संस्था प्रधान तथा एक अभिभावक को शोध सहयोगी के रूप में चयनित किया गया है। शोध सहयोगी चयन में विविधता का पूर्ण ध्यान रखा गया है ताकि शोध अधिकाधिक बौध/ प्रमाणिक, विश्वसनीय एवं वस्तुनिष्ठ बनाया जा सके।

**न्यादर्श चयनः–**

विद्यालयो एवं शोध संभग्रियो का चयन यादृच्छिक किया गया है तथापि विविधता का भी ध्यान रखा गया है।

| क0सं0 | नाम ब्लॉक | विद्यालय | शोध सहभागियो की संख्या | | | | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | विद्यार्थी | शिक्षक | संस्था प्रधान | अभिभावक या जनप्रतिनिधि | |
| 1 | कोटा शहर | 10 | 100 | 20 | 10 | 10 | 140 |
| 2 | लाडपुरा | 10 | 100 | 20 | 10 | 10 | 140 |
| 3 | इटावा | 10 | 100 | 20 | 10 | 10 | 140 |
| 4 | सुल्तानपुर | 10 | 100 | 20 | 10 | 10 | 140 |
| 5 | संगोद | 10 | 100 | 20 | 10 | 10 | 140 |
| 6 | खैराबाद | 10 | 100 | 20 | 10 | 10 | 140 |
| | योग | 60 | 600 | 120 | 60 | 60 | 840 |

**शोध उपकरणः–**

शोध उपकरणो का निर्माण शोध शिर्षक एवं शोध के उद्देश्यो के आधार पर किया गया है।

A. उद्देश्यो पर आधारित प्रश्नावलीयां

1 विद्यार्थियो के लिए
2 शिक्षको के लिए
3 संस्था प्रधानो के लिए
4 अभिभावक या जनप्रतिनिधियो के लिए

B.शोधकर्त्ता द्वारा विद्यालयो में संबंधित संचित अभिलेखो का अवलोकन।

**शोध विधिः–**

सर्वेक्षण , साक्षात्कार, प्रश्नोत्तर तथा अभिलेखो का अवलोकन ।

**शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः–**

मध्यमान औसत, प्रतिशत तथा लेखाचित्र।

**शोध के निष्कर्षः–**

लगभग सभी सम्बन्धित विद्यालयो की कक्षा 3से 8 तक के विद्यार्थियो को अभ्यास पुस्तिका निर्धारित समय पर वितरित कर दी गई है। अधिकतर विद्यालयो में शिक्षको के पद रिक्त होने के कारण तथा विद्यार्थियो का शैक्षिक स्तर अति निम्न स्तर का होने के कारण अभ्यास पुसितकाओ का वांछनीय उपयोग नही हो पा रहा है। शिक्षक का ध्यान अभ्यास पुस्तिका में विभाजित होने से पाठ्यपुस्तक पर भी अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता है। समस्या के समाधान हेतु विद्यार्थियो का पूर्व ज्ञान उन्नत होना चाहिए तथा पर्याप्त संख्या में शिक्षक होना चाहिए।

- ❖ TLMकी बजट राशि का उपयोग प्रायः अनाधिकृत शिक्षक कर लेते है जिससे TLM का विषय आधारित समुचित उपयोग नहीं होता है।
- ❖ विद्यालय में TLM के रखरखाव की समुचित व्यवस्था नहीं होने से खारिज करने योग्य ( Consumable)TLM ही क्रय की जाती है जिसका उपयोग दीर्घकाल हेतु नहीं होता है।
- ❖ TLM हेतु बजट राशि भी कम होती है।
- ❖ शिक्षक विद्यालय स्तर पर TLM का निर्माण करने हेतु योग्य व कुशल ( Skilled) नहीं होते है।
- ❖ TLM के रूप में कियाशील मोडल (Working) का पूर्ण अभाव देखा गया है।
- ❖ लगभग समस्त विद्यालयो में अभ्यास पुस्तिका एवं TLM से संबंधित संचित अभिलेखो का संग्रहण किया जाता है।

**सुझाव :–**

सरकारी एजेन्सियो द्वारा प्रायोजित नवाचारो के सफल कियान्वयन हेतु शिक्ष तन्त्र के विभिन्न घटको यथा विद्यार्थी, शिक्षक, संस्था प्रधान, शिक्षाधिकारी, अभिभावक तथा राजनितिज्ञो का ईमानदारी पूर्वक समर्पण आवश्यक है। शिक्षा की सस्ती लोकप्रियता (Cheap Popularity) के सिद्धांत का त्याग कर इसकी गुणात्मकता (Quality) पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। बिना पढे–पढाये ही सबको सफल करने जैसे नियमो को छोडना होगा।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. सुखिया एस. पी. एवं मल्होत्रा (1985)"शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
2. अग्रवाल जे. सी. – भारत में प्रथमिक शिक्षा 1986 विद्या विहार नई दिल्ली।
3. शर्मा आर. ए., 2001, शिक्षा अनुसंधान, सुर्या पब्लिकेशन मेरठ।
4. बेस्ट जान डब्ल्यू (1999) : "रिसर्च इन एजूकेशन प्रिन्टिस हाल ऑफ इण्डिया, " नई दिल्ली
5. मेहता, अरूण सी. (1996) "एजुकेशन फोर ऑल इन इण्डिया" कनिष्ठ पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, मिथ एण्ड रियलिटी, दिल्ली